ओमशांति! ओमशांति बच्चे कहते हैं। तभी भी बाप को तो याद करना होता है ना। 'ओमशांति' यह किसने कहा? आत्मा ने कहा। बच्चों को ये प्रैक्टिस पड़ जानी चाहिए। ओमशांति यानी आत्मा ने कहा– मैं शांत स्वरूप हूँ और बेहद के बाप का बच्चा हूँ। बाप हमको शिक्षा देकर... क्योंकि विश्व का तो रचता ही है, नई दुनिया का रचता ही है। देवी–देवता धर्म की, फिर इनको सिर्फ धर्म नहीं कहेंगे। नहीं, दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं और यह दैवी धर्म है, जैसे वो क्रिश्चियन धर्म है। वो धर्म स्थापन करते हैं, राज्य स्थापन नहीं करते हैं। कोई भी राज्य नहीं स्थापन करते हैं सिवाय बाबा (के), ऐसे कहेंगे तुम लोग; क्योंकि दोनों को बाबा ही कहना पड़ता है। तो क्या कहेंगे! या निराकार बाबा कहेंगे। सो भी तो अण्डरस्टूड है; क्योंकि अभी बच्चों को ज्ञान मिला है कि आत्मा ही मुख्य है। आत्मा ही सब कुछ है। अभी तुम आत्म–अभिमानी बने हो। आगे देह–अभिमानी थे। तो अभी आत्म–अभिमानी बने हो और आत्मा के बाप को निरंतर याद करते हो और वो बैठ करके लायक बनाते हैं; क्योंकि पावन बनाना पड़े ना, हम पुकारते जो आए हैं– पतित–पावन आओ। तो बाप आ करके कहते हैं कि अभी तुमको पावन बनाकर, फिर से तुम बच्चों को 5000 बरस पहले मुआफिक अपना राज–भाग दिलाता हूँ; क्योंकि दिलाते हैं। कोई ने हप कर लिया है। तो अभी तुम बच्चे जानते हो कि रावण ने तुम्हारा राज्य हप कर लिया। तो जब कोई राज्य हप कर लेते हैं, गुमाय बैठे हैं तो उनकी हालत क्या होती होगी! दरिद्रता को प्राप्त होते होंगे ना। तो देखो, यह भारत, जिसके तुम रहवासी हो, यह कितना दरिद्रता को प्राप्त हुआ है। नहीं तो यही भारत वा भारतवासी कितने साहूकार थे! तो था ना। ऐसे कहेंगे कि भारत को विश्व का राज्य था। अब कोई राज्य है नहीं। राज्य ही नहीं है; क्योंकि राजाई नहीं है। ये जो पंचायती राज्य है ना, ये तो पाई–पैसे का थोड़े टाइम के लिए संगमयुग का। जब से बाप आए हैं, तब ये स्वराज्य हुआ है। पहले नहीं था; परन्तु राजा–रानियाँ थे बहुत सब कुछ। तो बाप बैठकर समझाते थे ना। अभी दिल से लगता है। तुम किसको भी अच्छी तरह से कह सकते हो कि भई, तुम भारतवासी तो विश्व के मालिक थे, जब आदि सनातन देवी–देवता धर्म था, राज्य था; धर्म भी नहीं, पर राज्य था; क्योंकि अब अच्छी तरह से समझते हैं कि हम बाप से फिर से विश्व का स्वराज्य ले रहे हैं। कैसे? क्योंकि ये तो समझाया है ना– मनुष्य बैठ करके जो पुरुषार्थ करते हैं वो पुरुषार्थ तो याद पड़ता है ना। इसको भूलना नहीं चाहिए। यह निरंतर याद रखना चाहिए। कोशिश करके जितनी याद हो इतना याद करें। तो अब बाबा कहते हैं ना– दिन में ज़रा मुश्किल होता है; इसलिए बाबा कहते हैं भई, अमृतवेले बाप की ऐसे ही याद में कि हमने कैसे राज्य गुमाया। ये तो चलते–उठते...। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में तो बैठ गया होगा– हमने भारत...। 'हमने' फिर तुम कहेंगे; क्योंकि तुमको मालूम है, दुनिया को मालूम नहीं है। दुनिया को मालूम दिलाते रहते हो और ऐसे ही कि भई, तुम भारतवासी स्वर्ग के मालिक थे ना। पीछे 84 जन्म भोग, आधा में हार खाय फिर अभी देखो कौड़ी जैसे बने हो। अभी बाप फिर से...। अभी ये तो सहज बताना है ना। खुश–खैराफत सुनानी है ना। कोई गपोड़े नहीं सुनाते हैं। खुश–खबरी सुनाते हैं, कोई माने या न माने। तुम खुश–खैराफत सुनाते हो। बाप भी तुमको क्यों भेज देते हैं सर्विस पर (कि) जाकर सबको खुश–खैराफियत सुनाओ कि अभी बाप आए हैं और वही राज़ बताते हैं; क्योंकि दूसरे कोई भी विद्वान,आचार्य,पण्डित ऐसे नहीं बताते हैं कि बाप को याद करो। ऐसे कोई हैं? कोई भी नहीं है कि बाप को याद करो, बाप से वर्सा मिलना है और गुमाया है। अभी जिसने गुमाया है उनको दिल से लगता है। जिसने न लिया है, न गुमाया है, उनको कैसे दिल से लगेगा! शायद उनकी बुद्धि में कभी नहीं बैठेगा। हाँ, ये तो भला ज़रूर समझना चाहिए ना कि जबकि बाप आते हैं, राज–भाग देते हैं, तो उस समय में हम कहाँ होंगे! तो देखो, इन सब चित्रों में भी लिखा हुआ है ना। अब ये बुद्धि की समझने की भी बात है कि उनको ये समझाना चाहिए हम फिर शांतिधाम में थे, मुक्तिधाम में थे। फिर जब वो शंकराचार्य आए, ये सन्यासी निवृत्तिमार्ग का धर्म स्थापन करे। राजाई तो नहीं स्थापन करेंगे ना। धर्म स्थापन करे वो तो और ही गधाई स्थापन करते हैं; परन्तु पवित्रता है ज़रूर। वो सुख की बात है; क्योंकि घरबार छोड़ते हैं ना। वो बात तो यहाँ नहीं है। यहाँ तो बाप आ करके कहते हैं तुम ये समझ जाओ कि हम पवित्र

थे, अभी हम अपवित्र बने हैं, अभी हमको याद से पवित्र बन...। आगे विकार में थे, अभी निर्विकारी। अभी ज्ञान चिक्षा पर बैठना है, वो काम चिक्षा से उतर जाना है। तो काम चिक्षा और ज्ञान चिक्षा फिर समझने की तो सहज बात है ना। कभी(अभी) यही ज्ञान, कौन–सा ज्ञान? मन्मनाभव–मद्याजीभव। ये है सारे ज्ञान का मूल मंत्र, महामंत्र जिनको कहा जाता है। सबसे ऊँचे ते ऊँचा मंत्र ऊँचे ते ऊँचा बाप दे रहे हैं बच्चों को कि क्या करो बच्चों! मंत्र जपने की बात तो यहाँ नहीं रही। यहाँ तो समझने की बात रही। बाप समझाते हैं कि मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। मुझे याद करो और मेरे वर्से को याद करो। उसका उन लोगों ने ये लिख दिया है– मन्मनाभव–मद्याजीभव। बाकी बात तो सीध(सीधी) है ना। तुम सभी आत्माएँ सुनती तो हो ना। ये कौन सुनाते हैं? जानते हो कि शिवबाबा, हमारी आत्माओं का बाप, वो इन द्वारा हमको कहते हैं– अरे बच्चे, अभी सिर्फ मुझे याद करो। कल्प पहले भी मैंने ऐसे कहा था कि तुम मुझे याद करो और वर्से को याद करो। ये तो बिल्कुल कॉमन बात है ना। देह का...देह का ये भान छोड़ करके और अपन को आत्मा निश्चय करके और मुझे याद करो तो तुम्हारा ये विकर्म विनाश होये, एवर निरोगी बनेंगे। अभी ये दवाई तो बहुत अच्छी है ना। कोई ...तो नहीं है ना। तो किसको भी बच्चे समझाएँगे वो बिल्कुल समझेंगे कि इनकी ये बात बिल्कुल ठीक है कि इस योगाग्नि से हमारा ये पाप दग्ध होगा, ऐसे हो नहीं सकता है, नहीं तो ये महावाक्य कहाँ चले गए कि इस योगाग्नि से तुम्हारा यह जो विकर्म है, जिससे तुम विकारी बन गए हो, पाप–आत्मा बन गए हो, तुम पुण्य–आत्मा हो जाएँगे यानी विकर्माजीत हो जाएँगे मुझे याद करने से; क्योंकि ये खाद निकलती जाएगी। अभी ये समझाना बहुत अच्छा है। इसको अभी बाबा ऐसे कहते हैं। कल्प–2 बाबा ऐसे कहते हैं कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएगा और स्वराज्य तो लेती हो। लड़ाई सामने खड़ी है और ये कलहयुग का तो अंत है ही। खाली फर्क है (कि) कलहयुग को लम्बा (कर) दिया है; इसलिए घोर अंधियारे में हैं। अभी तुमको तो बाप... । अच्छा, हैं तब तो कहते हैं ना– देखो, वो घोर अंधियारे में हैं ना। कल्प पहले भी घोर अंधियारे में थे ना। तुम सोझरे में हो ना। तो ज़रूर जो सोझरे में हैं वो दूसरों को कहेंगे– ...तुम घोर अंधियारे में हो। सो तो गाया भी हुआ है और अभी प्रैक्टिकल में है। तुम जानते हो कि हम सोझरे में हैं, हमको सारी दुनिया के आदि,मध्य,अंत की नॉलेज है और बरोबर हम अपना फिर से राजभाग लेते हैं, जो हमने रावण से हराया है। वो हार और जीत का खेल तो है ना। हार और जीत, सुख और दुःख। ये तो कोई नई बात नहीं है। ये...चक्कर तो फिरता ही रहता है। जीत होती है, फिर हार होती है। गाया जाता है कि माया ते हारे हार है, माया पर जीते जीत। अब माया पर जीत कौन पहनाएगा? हार किसने खिलाई ? रावण ने। राम ने जीत पहनाई। ...ये सब भक्तिमार्ग की इतनी ढेर की ढेर कथाएँ हैं। चीज़ नहीं है ना। ये कोशिश करके जितना हो सके ये तो समझ में आ गया ना– हमने हारा आधा कल्प और भक्ति हुई और हमने इतने जन्म लिए। अभी हम फिर जीत पहन रहे हैं। जितना जो–2 पुरुषार्थ करेंगे। देखो, पुरुषार्थ तो करना होता है ना। औरों का भी कल्याण करना है ना। तो दूसरे के कल्याण करने में लग जाना चाहिए। यह बाबा क्या कर रहे हैं, और कोई धंधा है क्या! नहीं, बच्चों के कल्याण अर्थ ये सभी प्रबंध रच रहे हैं, राय दे रहे हैं– भाई ये करो, ये करो। तो जो बाप राय देते हैं उस राय पर करना है। जितना उस राय पर चलेंगे–करेंगे, औरों का कल्याण करेंगे, अपना जास्ती कल्याण करेंगे। इसमें खिटपिट की तो कोई बात नहीं है। इसमें बाप की और तो कोई बात नहीं है ना। यह बाप के पास पैसा तो नहीं है जो किसको कम देते हैं, किसको (जास्ती) देते हैं। यह बेहद का बाप तो समझाते हैं कि बच्चे, सबको यही बताओ कि बाप ये कहते हैं कि देह के अंहकार को छोड़ अपन को आत्मा निश्चय कर मुझ अपने परमपिता परमात्मा को याद करो; क्योंकि मुझे ही तुम कहते हो ना– पतित–पावन, सद्गति दाता, लिबरेटर, गाइड। ये अक्षर तो हैं ना और गाया भी हुआ है कि मच्छरों के मुआफिक वापस ले जाने वाला है। ये भी समझ में आता है कि बरोबर विवेक कहता है कि ये हुआ होगा, सतयुग में जबकि हैं ही थोड़े तो बाकी जो ये कलहयुग के अंत में इतने मनुष्य थे, कहाँ गए! अभी कलहयुग है ना। भले सतयुग में कुछ भी पता नहीं पड़ेगा। इस समय में तो पता पड़ता है ना कि बरोबर हम

सतयुग में थोड़े होंगे। थोड़े थे और एक धर्म था। अभी अनेक धर्म हैं, मनुष्य अनेक हैं, अनेक आत्माएँ हैं। ये हम जान गए कि ये सभी आत्माएँ निराकारी दुनिया में रहने वाले हैं; क्योंकि वही तो आत्माओं का धाम है ना– शांतिधाम। तो देखो, ये बातें अभी तुमको बुद्धि में अच्छी तरह से बैठती हैं। और कोई की बुद्धि में ये सब बात तो हैं नहीं, यथार्थ रीति से नहीं हैं, उल्टी–सुल्टी हैं। तो उल्टी–सुल्टी सुनते–3 उल्टे गए हैं। ये भी तो देखो, जो–2 उल्टे करते हैं उनको हम सब समझाते हैं; परन्तु सब तो झट नहीं समझ जाएँगे ना, धीरे–2...। यह झाड़ की जो स्थापना होती है तो धीरे–2 होगी ना। तूफान लगते हैं। चिड़ियाँ खा जाती हैं। अच्छी चीज़ है ना। तो जो अच्छा बगीचा होता है तो उनमें नुकसान भी होता है। तो देखो, ये बगीचा स्थापन हो रहा है। ये बुद्धि में अच्छी तरह समझाओ कि सब जो धर्म स्थापन करने वाले आते हैं, जाकर कोई बगीचा, कोई राज्य थोड़े ही स्थापन करते हैं। ये तो गुमाया हुआ राज्य प्राप्त करने के लिए तुम ये पुरुषार्थ करते हो। तुम्हारे दिल में है हम फिर से अपना राज्य, योगबल से और ज्ञान से, (प्राप्त) कर रहे हैं। उसमें पवित्रता मुख्य। यूँ कि कोई भी अपवित्र मुक्ति और जीवनमुक्ति धाम में जा नहीं सकते हैं और तुम जानते हो कि हमको जाना है जीवनमुक्तिधाम में वाया मुक्तिधाम हो करके; इसलिए पवित्र ज़रूर बनना है। बस, पवित्र बनने की एक ही है कि मामेकम् याद करो। तो देखो, ये बात थोड़ी भी जा करके, कहाँ भी कोई आते हैं, सुनाने के लिए, जो अभी निकाला है कि पतित–पावन नदियाँ हैं या पतित–पावन बाप, जो कहते हैं कि योग मेरे से रखने से तुम्हारा विकर्म विनाश होगा? यहाँ तुम इस शरीर को पावन बनाते हो। ये जो विकर्म हैं जन्म–जन्मांतर (के) वो कैसे खतम होंगे? वो कोई नदी थोड़े ही बैठ करके करेगी। ये तो शरीर भोगता है। यहाँ तो सारी आत्मा की बात है कि आत्मा में खाद पड़ी हुई है। ये कोई शरीर में नहीं। आत्मा में ही खाद पड़ी है, शरीर पतित हो गया है। अभी आत्मा की जब खाद निकले तो शरीर...। अभी ये तुम बच्चे जानते हो कि बरोबर खाद निकल जाएगी, हम गोरे बन जाएँगे, फिर हम अपने उस सुखधाम में आत्मा भी पवित्र तो वो भी पवित्र; क्योंकि दोनों अपवित्र हो गए हैं ना। अभी दोनों पवित्र कोई गंगा–स्नान से थोड़े ही होंगे। वो तो शरीर को बैठ करके...। सो भी क्या कोई शरीर... स्नान तो सदैव करते हैं पानी में। यह तो कोई बात ही नहीं। जो गंगा नदी पर रहने वाले हैं वो तो सदैव स्नान करते हैं। जमुना नदी पर भी सदैव स्नान करते हैं। फिर उसमें क्या होता है! ये क्या कोई खास दिन होता है, जिसमें स्नान करने से पाप नष्ट होंगे? ये तो हो भी नहीं सकता है। देखो, ये मूर्खता है ना। इसको अभी मूर्खता समझते हैं, जबकि हमको बाप ने आ करके बुद्धि दी है। अभी सबको समझाते रहते हैं और अच्छी तरह से समझाते रहते हैं कि ये बात बड़े अच्छे–2 अक्षरों में सिद्ध करके देनी है, एक ही बड़ी बात कि पतित–पावन तो बाप है ना, जो पावन बना करके स्वर्ग की बादशाही स्थापन करते हैं। अभी गंगा थोड़े ही स्थापन करेगी या सागर स्थापन करेगा! ये तो ज्ञान का सागर आ करके स्वर्ग की स्थापना करते हैं। उसमें ये सभी सन्यासी वगैरह कोई स्वर्ग में थोड़े ही जाएँगे। उनको तो स्वर्ग में जाना ही नहीं है। ये तो तुम्हारे लिए है। तो देखो, वो अपनी भक्तिमार्ग की बात, ये तुम्हारी ज्ञान की बात है। ज्ञान में आएँगे भी थोड़े। बाप कहते हैं ना– कोटों में कोऊ, कोऊ में कोऊ, कोऊ में कोऊ ऐसे समझेंगे। सो भी आएँगे तो बहुत ही। लाखों आएँगे। ऐसे नहीं कि नहीं आएँगे। सुनेंगे तो ज़रूर। अभी इतना जो मत्था मारते हैं, अभी नहीं सुनेंगे तो फिर आगे चल करके सुनेंगे। सुनेंगे ज़रूर और फिर जो एकदम भगत हैं, वो तो कभी ये बातें छोड़ेंगे भी नहीं। बाकी जो हैं, जो समझते हैं भक्ति मुर्दाबाद है, ज्ञान जिन्दाबाद है, तो देखो तुम अडोल बैठे हुए हो। मनुष्य क्या–2 करते हैं, देखो मरते हैं क्या करते हैं, जीते हैं क्या करते हैं, खुशियाँ मनाते हैं, रंज मनाते हैं। तुम्हारे पास तो ऐसी कोई बात ही नहीं है। भई, यहाँ तो जो भी ब्राह्मण लोग हैं, उनमें कोई जन्म तो लेंगे नहीं, बाकी मरेंगे। जन्म तो बंद कर देते हैं ना कि कोई भी विकार में नहीं जाने का, तो बच्चा कैसे पैदा होगा! अगर बच्चा पैदा हो जाएगा तो हम कह देंगे– ये तो ब्राह्मण है नहीं, ये शूद्र है। फिर उनको इतना टाइटल देते हैं कि शूद्र से भी शूद्र है एकदम। ...बाप तो कह सकते हैं ना। देखो, कोई भी बच्चा अगर विकार में जाते हैं यूँ भी अज्ञान काल में लोकल(लौकिक) बाप भी अगर देखते हैं ये बच्चा

कोई खराब काम करके आते हैं तो उनको बोल देते हैं, नाम ही उसका रख देते हैं– काला मुँह होवे तुम्हारा! तुम अपना मुख काला करते हो। अभी मुख काला करते हो, कोई होता थोड़े ही है ; परन्तु नहीं, देखो, वो गायन है ना– काला मुख कृष्ण का। क्यों? ये तो कोई भी जानते नहीं हैं। अभी तुम जान गए कि काला मुख क्यों। कृष्ण का काला मुख कैसे हो सकता है! पहले तो आत्मा का काला चाहिए ना तब तो शरीर काला मिले। तो देखो, मनुष्यों को कुछ भी समझ थोड़े ही रहती है। एकदम जैसे बेसमझ। इसीलिए तो गाया हुआ है ना– सूरत मनुष्य की, सीरत बंदरों की। फिर वही सूरत मनुष्य की, सीरत देवताओं जैसी, देखो! मनुष्य तो मनुष्य है ना। तो देखो, फर्क इतना होता है! अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम बरोबर जैसे कि जनावर बन गए थे। पूरा कुछ भी पता नहीं था, घोर अंधियारे में थे। ये मालूम ही नहीं था कि हम कौन थे। अभी तुम अपन को जान गए– अरे, हम तो सो देवी–देवता थे। सो भी तभी समझते हो जबकि ब्राह्मण बने हो। तब ज्ञान मिला है। नहीं तो जो ब्राह्मण न बने हैं उनको थोड़े ही मालूम है कि हम सो देवता थे। अभी तुमको मालूम मिला(पड़ा) है– हम सो देवता थे, हमारा राज्य था। अभी हम राजाई में मदद करते हैं। तो थोड़ी घड़ी कुछ न कुछ मदद करते तो हो ना। ज्ञान तो मिला है, जानते हो कि हम शिवबाबा की संतान है। इतना तो सबको है ना। भण्डारी है या कोई भी है। भले नॉलेज नहीं है, ये तो समझते हैं ना– बरोबर हम शिवबाबा के हैं। ...दवाई लेने से तुम इस बीमारी से छूट जाएँगे। तो दवाई तो ज़रूर लेंगे ना। अगर न लेंगे तो फिर क्या होगा! पीछे डॉक्टर के पास जाने की दरकार भी है, दवाई लेने की दरकार भी है। तो जबकि यहाँ ब्राह्मण बने हो और तो फिर तुम बच्चों के लिए बिल्कुल सहज ही ये मत मिलती है, कोई दवाई नहीं देते हैं। मत मिलती है, राय देते हैं। किसको? बच्चों को। हे बच्चे! अभी हमको याद करो। देखो, सीधा कैसे कहते हैं– हे बच्चों। एक बच्चा तो नहीं है ना। बच्चे तो बहुत बैठे हैं। हे बच्चों! अभी मामेकम् याद करो और अपने वर्से को याद करो। तुमको 84 जन्म (के) चक्कर का समझाया ना। अभी वापस होना है ना! तो बस अभी पुराना चोला छोड़ना है, यह शरीर भी पुराना हो गया है, दुनिया भी पुरानी हो गई है और आत्मा भी अभी बिल्कुल ही अंधियारे में है। चलो, अभी मेरे को याद करो। तो आत्मा सोझरे में आती जाती है और आत्मा को ज्ञान मिलता रहता है, वो धारणा करती जाती है। जितना याद करते हैं, सोझरे में आते हैं, इतनी धारणा भी अच्छी होती जाती है और फिर औरों को भी धारण कराते रहते हैं। औरों का भी तो कल्याण करना है। बाप तो नहीं एक–2 से जाकर बात करेंगे। तो तुम एक रूहानी सैलवेशन आर्मी हो। वो हैं सब जिस्मानी बातों की बातें। ये है रूहानी। तो ये बेड़ा जो उडा(डूबा) हुआ है हर एक मनुष्य का और फिर भारत का, तो तुम जैसे बेड़ा पार करने वाली हो। खिवैया हो ना। खिवैया तो पार करते हैं ना। इसलिए तो बाप के नाम देखो कितने रखे हुए हैं; परन्तु ये गाना है सिर्फ भक्तिमार्ग का। अभी प्रैक्टिकल में तुम जानते हो कि यह पतित–पावन है और यह रास्ता बताने वाला है, अंधों की लाठी है। गाते भी हैं– प्रभु! आप लाठी। तो देखो, हम अंधे थे और बाप ने लाठी दी है यानी रास्ता बताया है ना। लाठी देते हैं (माना) क्या? रास्ता बताते हैं। तो बाबा ने रास्ता बताया है और समझाया है कि बच्चे, तुम राज्य करते थे, पीछे ऐसे–2 जन्म लिए, अभी 84 का चक्कर पूरा हुआ। अभी ये पुरानी दुनिया, पुराना वस्त्र, ये पुराना सभी खतम होने का है। फिर यह नाटक का नए सिर शुरू होना है । फिर शुरू तो सतयुग से ही होगा। ये तो समझ की हुई ना। ये तो बुद्धि में बैठ जाना चाहिए ना कि बरोबर नाटक पूरा होता है और हम नाटक को जान चुके हैं। अभी बरोबर हम सब फिर वापस जाते हैं। सब दुःख से छूटते हैं। सबका दुःख हर्ता है एक। कोई गुरू–गोसाईं थोड़े ही हो सकता है किसका दुःख हर्ता, सुख कर्ता। सर्व का दुःख हर्ता, शांति और सुख कर्ता। बस, ये तो सहज है ना कि सबका दुख हर जाएँगे और फिर सुख होगा और शांति होगी। ये बच्चों की बुद्धि में बैठा (कि) इतने सभी धर्मों की जो भी सभी आत्माएँ हैं, वो सब जा करके वहाँ अपने–2 सेक्शन में... बैठ जाएँगी और फिर हम नई दुनिया में आना शुरू करेंगे, अपना ये जो पुरुषार्थ है उनकी प्रालब्ध पाने। अभी ये तो बाप जानते हैं कि इनको रावण ने कितना मूर्ख बुद्धि कर दिया है और फिर देखो, कितना तुम्हारा पारस बुद्धि... पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि। अभी ये समझते

तो हो ना। बाप भी समझते हैं और कहते हैं और गाते भी हैं कि बरोबर पत्थर बुद्धि से वो एकदम पारसनाथ बुद्धि। बरोबर तुम जानते हो कि हम प्रैक्टिकल में पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि। दुनिया नहीं जानती है। पत्थर बुद्धि की हालत देखो और फिर हम पारस बुद्धि के लिए जो पुरुषार्थ करते हैं इसका ..। अभी उसमें बच्चों की कॉम्पिटिशन चाहिए। ये स्कूल है, हर एक को अपना ऊँच पद पाने की तो दिल होती ही है। जिसको ऊँच पद पाने की दिल होती है वो ज़रूर सर्विस ही करेंगे। जितनी–2 जास्ती सर्विस करेंगे इतना ऊँचा पद पाएँगे। तो क्या कहते हैं ? फॉलो मदर एण्ड फादर; क्योंकि ये तो राय देते ही रहते हैं, रोज़ समझाते रहते हैं और कोई बहुत बड़ी बात तो नहीं समझाते हैं। ये चक्कर समझाना है बिल्कुल क्लीयर और वो बताना कि बाप ने 5000 बरस पहले भी ऐसे ही कहा था कि मेरे साथ योग लगाओ, इस योगाग्नि से तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा। अभी विकार में मत जाओ; क्योंकि विकार से ये काला हो गया है। देखो, उनको भी श्याम कहते हैं ना। सांवरा ही कहते हैं, नहीं तो कहते ऐसे हैं कि सर्प ने डंसा तो एकदम काला हो गया। आयरन/लोहा काला होता है ना। तो इसको अंग्रेजी में कहा ही जाता है– आयरन एज्ड वर्ल्ड यानी सभी काले। काले किससे होते हैं? अरे, काम चिक्षा से काले, ज्ञान चिक्षा से गोरे। कितनी अच्छी, सीधी–2 बात है, सो भी है तुम्हारे लिए, बच्चों के लिए। बच्चों को तो ये बहुत सहज बात है हर एक बात में। अभी देखो ये जाते हैं वहाँ इलाहाबाद में भी, तो भी जा करके यह बात तो समझा सकते हैं ना कि पतित–पावनी यह नहीं, पतित–पावन वो है और वो तो ऐसे कहते हैं कि मामेकम् याद करो, मेरे से योग रखो तो विकर्म विनाश हो जाएगा। पतित–पावन तो ऐसे कहते हैं; क्योंकि पतित–पावन कोई कहने वाला चाहिए ना। तो ज़रूर पतित–पावन कहते हैं निराकार परमपिता परमात्मा को। निराकार तो सभी आ करके शरीर धारण करके और बात करते हैं, नहीं तो बात कैसे करें? तो ज़रूर बाप को भी आ करके शरीर में प्रवेश करना पड़े; क्योंकि वो कोई गर्भ में तो नहीं जाते हैं। वो बोलते हैं मेरा जन्म दिव्य है। वो खुद कहते हैं, समझाते हैं कि मैं आ करके इस साधारण तन में निवास करता हूँ, जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। मुख्य बात यह हो गई ना, जो अपने 84 जन्मों को नहीं जानते हैं। अभी कोई भी मनुष्य 84 जन्मों को तो समझते भी नहीं हैं। किसके 84 जन्म, आगे कुछ ज्ञान था? नहीं, सिर्फ ऐसे सुन लेते थे– 84 का चक्कर है। क्या सबके लिए 84 का चक्कर है? 84 लाख की तो बात ही नहीं, 84 का चक्कर है। अभी किसने 84 जन्म लिया है यह बड़ी...है ना। जिसने लिया है वही कीड़ों को तुम ब्राह्मणी भूँ–2 करके ब्राह्मण बनाएँगी। वो आते जाएँगे, आते जाएँगे, कोई न कोई आते जाएँगे। देखो, बाबा भी कहते रहते हैं ना– कोई भी कीड़ा हो तो उनको भ्रमरी बनकर भूँ–2 करती रहो। अगर ब्राह्मण होगा तो खड़ा हो जाएगा और ऐसे बहुत खड़े हो जाते हैं। बहुत माताएँ खड़ी कर देती हैं पति को। कोई पति है माता को खड़ा कर देते हैं ऐसे ज्ञान के भूँ–2 से। तो तुम ब्राह्मणों का काम हुआ ना भूँ–2 करना या बैठ जाना! अगर भूँ–2 करनी आती है तो करना चाहिए जा करके, तो कोई का कल्याण हो और अपना पद भी ऊँचा हो और यह समझा भी जाएगा ना– ब्राह्मण कुल में सबसे अच्छी–गुड सर्विस कौन करते हैं, कितने को आप समान बनाते हैं। अभी उनका प्रूफ तो है ना। देखो, बना करके और वो यहाँ ले आते हैं बाबा के सन्मुख। आप समान बनाए, उनको नॉलेज दे करके, फिर उनको इतनी कशिश होती है कि हमको बाबा के पास ले चलो। तो देखो, सर्विस करते हैं ना। तो ऐसा बनना चाहिए ना। पण्डा बनना चाहिए। होशियार बनना चाहिए। देखो, बाबा कहते हैं ना कि जो होशियार हो, वही तो जाकर सर्विस करेंगे और सबूत ले करके आएँगे बाबा के सन्मुख। यह देखो, फिर उनका सबूत कि बरोबर इसने मेहनत करके, अपने शिष्यों सहित...। दूसरे भी मददगार रहते हैं। मदद तो सब करते हैं ना। मदद तो जो किचन में रहती हैं वो भी करती हैं; क्योंकि वो उनको फुर्सत देती हैं, नहीं तो बहुत होती हैं– बाबा, हम क्या करें! सुबह को कहाँ किचन करें, खाना पकावें या जो आवे उनको अटेण्ड करें? इसलिए हमको कोई ऐसी दो जो उन कामों में भी मदद करे, तो हम सर्विस में लग जावें। तो देखो, जो रूहानी सर्विस न कर सकते हैं तो जिस्मानी सर्विस...। अच्छा, तुम यहाँ जाओ, तुम यहाँ जाओ। इसके पास जाओ और सीखो भी। फिर बाबा दृष्टान्त देते हैं कि ऐसे–2 बहुत होते हैं जो बावर्ची होते हैं और वो जाकर सुनते भी हैं। सुन करके और वो जो उनके बच्चे हैं ना, मैं उसका दृष्टान्त सुनाता था ना– यह स्वामी महाराज परमानन्द। उनका बावर्ची था हेमराज। हेमराज को दाढ़ी थी। टोपी भी ऐसे पहनते थे। तो देखो, दृष्टांत तो दिया जाएगा ना– बावर्ची ने गद्दी पकड़ लिया और

बच्चों ने कभी इतनी नहीं पढ़ी। तो हो सकता है ना। तभी बाबा भी कहते हैं ना– सब काम सीखो, यह सहज है। कोई डिफीकल्टी नहीं है। बाप को याद करना और दूसरे को भी समझाना या 84 का चक्कर समझाना, यह तो बिल्कुल ईज़ी बात है। चक्कर भी लगा हुआ है। अच्छा, ईज़ी नहीं कहते हैं, भला यह तो समझा होगा कि दो बाप हैं। एक है बेहद का। तो देखो, हम भारतवासी हैं। हैं भी हम भारतवासी। बरोबर हम भारतवासी स्वर्गवासी थे। अभी नर्कवासी बने हैं। बस, वो तो समझाना सहज है ना कि स्वर्गवासी से हम नर्कवासी कैसे बने, आधाकल्प में रावण कैसे मिला। इसने देखो यह हालत, पतित बनाय दिया! तो पतित बनाने वाला रावण और पावन बनाने वाला राम। सो कैसे बना रहे हैं वो तो तुम जानते हो, तभी तो दूसरे को समझाते हो ना। तो ये तो बड़ी सहज बाते हैं। तो इस धंधे में लगना चाहिए और जितना हो सके इतना अपना टाइम निकालकर, यह जो बोझा है ना पाप का, वो कैसे भी उतारना चाहिए उस याद से। यह तो दवाई है ना। तो दवाई का सेवन तो करना चाहिए ना। यह दवाई कोई पीने की नहीं है। अभी जितना कोई याद करेगा उतना विकर्म विनाश होगा। अभी यह तो समझ की बात हुई ना कि हम कोई न कोई टाइम निकाल करके, भला बाबा को याद करके विकर्मों का तो विनाश कर देवें ना। अच्छा, बोलते हैं– दिन में हमको शरीर निर्वाह के लिए...। सो तो बाबा कहते हैं ना कि शरीर निर्वाह के लिए तुमको सारा दिन छूट है। फिर कोई तो टाइम निकालना पड़ेगा ना। तो फिर अमृतवेला। भक्ति में भी अमृतवेला है तो ज्ञान में भी अमृतवेला है। तो धंधे के लिए तो मना नहीं करते हैं; क्योंकि कर्मयोगी हैं। स्त्रियों को भी मना नहीं है। खाना–पीना पकाओ, अपने घर की सम्भाल करो, बच्चों की सम्भाल करो। बाकी तो बच्चे सुबह को तो सोए पड़े रहते हैं। सुबह को उठ करके अपने याद में रहो। बड़े बच्चों को भी उठाना जितना हो सके। जितना समझदार कोई बच्चा हो तो उनको बैठाओ, बैठो और शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा को याद करो। बड़ा बाबा है। वो स्वर्ग का मालिक बनाएगा। वो बाबा बादशाही देंगे और ऐसे कृष्ण जैसा बनेंगे तुम। बस, कृष्ण सामने रख दिया। अगर तुम शिवबाबा को याद करेंगे तो कृष्ण का पद पाएँगे। है भी ऐसे ही बरोबर, शिवबाबा को याद करते हैं। उनके सामने शिवबाबा भी रखो और कृष्ण भी रखो। हैं ना, शिवबाबा भी है और उसके नीचे लक्ष्मी–नारायण यही कृष्ण–राधे हैं, और कौन हैं! शिवबाबा उन द्वारा कहलाते हैं कि मामेकम् याद करो तो यह पद पाएगा। ऐसी समझानी इसके ऊपर सहज है; इसलिए बाबा ये सभी चित्र और यह लॉकेट बना रहे हैं समझाने के लिए। उसी के ऊपर– यह शिवबाबा, यह ब्रह्मा द्वारा प्रवेश करके समझाते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा। फिर कभी विकार में नहीं जाना और तुम यह बनेंगे और 21 जन्म के लिए तुम राजाई लेते रहेंगे। तो कितनी सहज बातें हैं समझाने की, फिर भूल जाते हैं। देखो, जो पुरुषार्थ नहीं करते हो तो भूल जाते हो। नोट कर देना चाहिए, नहीं तो सवेरे में उठकर भला यह थोड़ा चिंतन तो करना चाहिए ना और ऐसे काम करते भी फिर प्रैक्टिस करनी होती है कि भोजन बनाते हम शिवबाबा को क्यों नहीं याद करें! यह बुद्धि से चलता रहे। यह तो बुद्धि काम करती है ना। जैसे कोई भक्ति में बैठते हैं। कृष्ण की याद में बैठते हैं तो कारखाना याद आता है, घर याद आता है। बुद्धि चली जाती है। भक्तिमार्ग में ऐसा बहुत होता है। बाबा अपना अनुभव सुनाते हैं ना। बैठते थे, हम शिवबाबा की याद में बैठते हैं, हमको कोई की भी याद न आवे। कारखाना याद आता था तो चुण्डरी पहनते थे। अपन को चमाट भी लगा देते थे। यह जब नारायण को याद करते थे, उनसे दिल लगी हुई थी। तो यह भी ऐसे ही, ज़रूर बुद्धि जाएगी कहाँ न कहाँ; परन्तु फिर भी कोशिश करके उनको याद करना है; क्योंकि वहाँ तो कुछ पता नहीं था, नारायण को याद ज़रूर करना है, जैसे कि हमको नारायण से कुछ मिलना है या क्या होना है मतलब! कोई पता थोड़े ही था। अंधश्रद्धा यानी कुछ भी पता नहीं। अभी तो मालूम है, बड़ी जबरदस्त प्राप्ति होती है। अगर हम याद करेंगे तो हम विश्व के मालिक बनते हैं। अभी यह अंधश्रद्धा तो नहीं हुई ना। बल्कि हम समझते हैं अच्छी तरह से। जब समझते हैं तो हर एक को इंडिविजुअली अपना वर्सा लेना है। श्रीमत देते हैं, हर एक बच्ची या बच्चा कोई भी हो, इंडिविजुअली बाप को याद करना है, वर्से को याद करना है। यह सबको समझाना है, मित्र–संबंधी, जो कोई होवे, जितना हो सके, आज नहीं सुनते हैं, कल सुनेंगे। कल नहीं सुनते हैं, परसों सुनेंगे; (पर) सुनेंगे ज़रूर; क्योंकि फिर भी तो हिन्दू हैं ना, हैं तो देवता धर्म के ना और हैं तो भारतवासी ना। वही भारत है ना। तो कम से कम अपने जो हैं, अरे बाबा कहते हैं ना कि ढूँढ़ना है हमारे भगत तो जाओ, शिव के

मंदिर में जाओ, लक्ष्मी–नारायण के मंदिर में जाओ, कृष्ण के मंदिर में जाओ, रामचंद्र के मंदिर में जाओ, ये हमारे बहुत पुराने भगत हैं। इन्होंने ही सबसे जास्ती पहले भक्ति की है– शिव की भी, पीछे देवताओं की भी। उन्हीं को ढूँढ़ो अभी भी। अभी भी वो देवताओं में तो हैं ना। यह तो समझते हो कि देवता धर्म के हैं, तभी तो हम देवताओं को पूजते हैं। क्रिश्चियन हैं क्रिश्चियन धर्म के तभी तो क्राइस्ट को पूजते हैं, और तो कोई दूसरा उनका है नहीं। हमारे पास तो बहुत ही, टू मच चित्र हो गए हैं। यह भारत को कहा जाता है कि यह टेम्पल्स का भारत है। इसमें बहुत मंदिर हैं। ढेर के ढेर मंदिर हैं भक्तिमार्ग के। नहीं तो वहाँ तो तुम देखते हो क्राइस्ट की चर्च। चर्च तो सबकी एक है, उसमें सबमें क्राइस्ट। जीज़स, क्राइस्ट, मेरी और फलाना, और तो कोई नहीं है ना। कुछ भी कहाँ भी, बौद्ध देखो बुद्ध, बस और तो कुछ भी नहीं हैं दूसरे। इस्लामी का भी उनका वो अपना है। हमारा तो देखो भक्ति। यहीं फिर कहा जाता है ज्ञान–भक्ति। और कोई भी जगह में ज्ञान–भक्ति की बात नहीं होती है। यहीं सिर्फ ज्ञान–भक्ति और दिन–रात। देखो, पूरी दिन–रात। दूसरा कोई का भी दिन–रात नहीं है। यहाँ का दिन और रात है। बरोबर सो भी गाते हैं– ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। यह सुनते तो आते थे। अभी तो तुम समझा सकते हो ना– ब्रह्मा का दिन– सतयुग–त्रेता और रात– भक्तिमार्ग; क्योंकि धक्का खाना, भटकना। तो ये सब सहज बातें हैं ना समझने की। तो अभी तो तुम अपनी इसी कमाई में लगे हुए हो। दुनिया में क्या होता है वो तो तुम जानते हो कि दुनिया में तो हंगामा ही है। यह दुनिया तो कब्रिस्तान होनी ही है। यहाँ क्या रखा हुआ है! इसलिए इससे बुद्धि का योग टूटता जाता है यानी बुद्धि कहती है कि अब कोई यहाँ थोड़े ही रहने का है। यह तो देखो सब काँटे हैं, एक/दो को लड़ते–झगड़ते रहते हैं। जैसे कि हम यहाँ इस दुनिया के हैं नहीं। लंगर हमारा उठ चुका है, हम जा रहे हैं। कहाँ जा रहे हैं? अपने घर जा रहे हैं बाबा के पास। बाबा ने हमको सिखलाया, अच्छी तरह से समझाया, लायक बनाया, फिर जाकर बादशाही करेंगे। बस, बाप को याद करना है और बादशाही को याद करना है। यह भी तो बाप को याद करता है। सब बाप को याद कर...। तो बाप दोनों इकट्ठे हैं; इसलिए बाबा, बाबा ही कहते हैं। बाबा कहते हैं, बाबा कहते हैं– अब मुझे याद करो। अभी जब बाबा कहते हैं मुझे याद करो, अभी यह तो है ना, इसको क्या याद पड़ेगा! यह डिफीकल्टी है वहाँ जाने की। तो बाबा कहते हैं मामेकम् याद करो और देही–अभिमानी बनो। तो देही–अभिमानी बनो, यह तो मनुष्यों को कहते हैं ना। कौन कहते हैं? जो है ही आत्मा। देह–अभिमान तो उनको है नहीं; क्योंकि देह नहीं है तो उनको अभिमान काहे का! वही कहते हैं। वो तो सबको कहते हैं। देखो, इनको भी कहते हैं; क्योंकि वो खुद तो है ही देही–अभिमानी ना। देह–अभिमान तो उनमें कभी भी होता ही नहीं है ना। अभी इसमें आकर प्रवेश करके, तो यह देह कोई उनकी थोड़े ही है जो उनको अभिमान हो– यह मेरी देह है। वो बोलते हैं– मैंने जैसे कि लोन लिया है किराये पर। समझाने के लिए, पढ़ाने (के) लिए, नहीं तो ज्ञान सागर पढ़ावे कैसे? उनका अपना शरीर तो कुछ भी नहीं है। देवताओं को है, तो उनको फिर ऊपर में तभी होने का है क्या? नहीं, यहाँ उनका कोई जड़ है नहीं। बाकी शिव तो शिव ही शिव। उनका नाम है नहीं, उनकी जन्मपत्री निकलती नहीं है। जन्मपत्री यहाँ सबकी है। कृष्ण की भी है तो सबकी है। पहले ते पहले नंबर की भी जन्मपत्री निकलती है, रात में यहाँ वेला भी लेते हैं। इनका तो रात का वेला भी नहीं है। बस, यह शिवरात्रि। अरे, रात्रि भी कब, कौन–सी रात्रि? मनुष्य कुछ समझते थोड़े ही हैं। रात्रि माना वो भी रात्रि, जैसे कृष्ण का जन्म रात का है, तैसे शायद शिव का भी रात का है। रात का भी जन्म शिव का किसमें है? वो तो आत्मा आई, कृष्ण ने जन्म लिया। अरे, इसका कोई ठिकाना ही नहीं है, इसकी रात्रि क्या! वो किसको भी पता नहीं है कि शिवरात्रि क्या है। अच्छा, शिव अगर आया तो किसमें आया? जन्म लिया तो किसमें आया? अच्छा, टेम्पररी आया तो किसमें आया? देखो, किसको भी पता नहीं है। लिखा हुआ है ब्रह्मा द्वारा बरोबर। समझ में नहीं आता है, किसकी इतनी बुद्धि! तो बरोबर प्रजापिता ब्रह्मा। तो ज़रूर आएँगे इसमें। अभी वो सर्वव्यापी की तो बात ही निकल जाती है ना। वो तो कहते हैं– मेरा जन्म दिव्य है। मैं तो मालिक हूँ। जिसमें चाहें हम उसमें जाकर मुरली बजा सकता हूँ। ऐसे करते हैं बरोबर। फिर वो लोग हमको कहते हैं बरोबर कि शिवबाबा आया था, यह आया था, यह आया था। हाँ, कोई में आता है, कोई में नहीं आता है, कोई में फिर माया की प्रवेशता भी होती है। तो ये सभी हैं समझने की बातें। दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है वो एक सेकेण्ड–2 जो कुछ होता है ड्रामा में है। भई

आज फलाना हुआ, यह ड्रामा में कल्प पहले भी ऐसा हुआ था। ये बातें ऐसी अच्छी–2 हैं, कोई भी समझ सकते हैं। यही सिर्फ याद आए कि बाबा से बरोबर हम भारत में बादशाही लिया था, फिर रावण ने गुमाय दिया है, अब फिर बाबा रास्ता बताते हैं। रास्ता बड़ा सहज है– मुझे याद करो और वर्से को याद करो, पवित्र बनो, बस। इसको सहज ते सहज कहा जाता है; परन्तु देखो, याद नहीं करते हैं, औरों को बैठ करके सर्विस नहीं करते हैं। अच्छा, औरों की सर्विस नहीं करते हैं, घर में भी अगर बैठो, खाना पकाओ, कहाँ भी जाओ–आओ, तो भी तो बाप को याद करो और कोई भी पापकर्म जास्ती न करो; क्योंकि पाप की तो दिल खाती है ना। देखो, अभी बाबा के पास सब आते हैं बाहर वाले। अपने वाले तो कभी आते नहीं हैं, वो तो बात ही छूटी; परन्तु बाहर वाले सब आते हैं। आकर बाबा को सुनाते हैं– बाबा, हम(को) 10/12 बरस की यादगिरी है– हम ऐसे पैसा चुराया, ऐसे यह चीज़ उठाकर उसको दी, ऐसे किया, ऐसे खराब काम किया। वो सब आ करके बताते हैं। उनको डर है, शिवबाबा कहते हैं– मुझे बता दो तो तुम्हारा विकर्म विनाश होगा। तो देखो, जो बताते हैं तो उनकी वो आशा तो पूरी हो जाती है ना। अच्छा, जो नहीं बताते हैं, उनका पाप बढ़ता ही जाता है। याद रख लेना, उनका बढ़ता ही जाता है; क्योंकि उनको लज्जा आती है बताने के लिए। वो पास्ट की बात तो मुश्किल है किसको याद करना। इस जन्म की तो बाप कहते हैं ना। तो पाप करते भी हैं, किया भी है, तो भी बताते नहीं हैं कि बाबा, मेरे से ये–2 सभी भूलें हुई हैं। लज्जा आती है, बाबा क्या समझेंगे! पता नहीं किसको बता न देवें! उनको वो खाता है अंदर में और वो पाप बढ़ता जाता है, बढ़ता जाता है। धारणा होती ही नहीं है। सुनाते कुछ नहीं है। मल्टीप्लीकेशन होता जाता है। बुद्धि मलिन होती ही जाती है; क्योंकि बाबा (ने) जो डायरेक्शन दिया, श्रीमत दी, उसमें चले ही नहीं। बाबा कह देते हैं ना कि मेरे को आ करके...। कोई समझते हैं– अच्छा, हम बाबा को कह देते हैं– बाबा, हमने यह किया, यह किया। बाबा बोलते हैं– नहीं, साकार के पास जाओ तो उनको मालूम पड़ेगा ना– इनके ऊपर नज़र डाले रखनी है, सम्भाल करनी है, यह करनी है। मुझे बताया, उनको तो पता ही नहीं पड़ेगा। अच्छा, तुम वहाँ काला मुँह करते हो, बोलते हो– बाबा, मैंने काला...। अरे पर, साकार को कैसे मालूम पड़े! तो वो तुमको शिक्षा देवे। ऐसे बहुत ठग लोग हैं, जिनको पाप–आत्मा ही कहा जाता है। बहुत हैं ऐसे, विकार करते हैं, बोलते हैं– अच्छा बाबा, हमारे से भूल हो गई। फिर सुबह को बैठकर उनको कहते हैं और बाप कहते हैं– नहीं, साकार के पास जा करके समझाना है। टीचर तो वो है ना सन्मुख सामने; परन्तु बड़ी लज्जा। बहुत हैं ऐसे, बाबा जानते हैं अच्छी तरह से कि इसका कितने पाप हैं। पास्ट का तो है ही है, वो तो बात मत पूछो। बाकी अभी जो आए हैं बाप के (पास), बहुत पाप करते रहते हैं। बहुतों का तो चलता ही रहता है। कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। हेर पड़ गई है। झूठ बोलना, यह तो नंबर वन हेर पड़ी हुई है बहुतों को; परन्तु झूठ बोलने की कोई दरकार ही नहीं यहाँ। झूठ बोलने की क्या दरकार पड़ी है! यह तो झूठखण्ड है ना। तुम तो अभी सचखण्ड में चलते हो, झूठ क्यों कहते हो? अगर कोई झूठ बोला है तो क्यों नहीं आकर कहते हो– बाबा, मेरे से आज झूठ बोल गई है, आप क्षमा करना। तो क्षमा करना माना फिर उनका वो झूठ कम होगा। अगर न आएँगे तो झूठ तो झूठ ही झूठ, सच कभी कहेंगे ही नहीं। अच्छा! कहाँ गई टोली! मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का याद–प्यार और गुडमॉर्निंग।

कल–2 करके काल खा जाता है– यह बहुत मशहूर है। अब यह तो कोई इस तरफ नहीं है; पर तुम्हारे पास ऐसे बहुत आते हैं जो फिर बोलते हैं– कल करेंगे या एबसेन्ट होते हैं। बोलो– देखो, पढ़ाई पढ़ करके अच्छी तरह से पक्का हो जाओ। काल कोई भी वक्त में खा सकता है। धन तो बाबा से जितना हो सके ले लो, ले लो एकदम, झोली तो भर लो कम्प्लीट। काल के ऊपर भरोसा थोड़े ही है (यानी) शरीर के ऊपर। मीठे–2, बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।